कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

828011

क्रम संख्या........................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

[redacted]

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय .... कृषि विज्ञान

परीक्षा का दिन .... शुक्रवार

दिनांक ....28-03-25....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	9	19	
2	5	20	
3	10	21	
4	1½	22	
5	1½	23	
6	1½	24	
7	1½	25	
8	1½	26	
9	1½	27	
10	1½	28	
11	1½	29	
12	1½	30	
13	1½	31	
14	3	योग	56
15	3	प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	4	56	fifty six
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर........ संकेतांक 36786

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 177/2024

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी :–
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		[SECTION-A]
	1.	बहुवैकल्पिक प्रश्न -
1/2	(i)	(ब) खेजड़ी
1/2	(ii)	(अ) सिक्किम
1/2	(iii)	(स) गाजियाबाद
1/2	(iv)	(ब) इजराइल
1/2	(v)	(अ) ओरोबन्की
1/2	(vi)	(अ) एस्ट्राजीन
1/2	(vii)	(स) 10-15% अधिक
1/2	(viii)	(द) धान
1/2	(ix)	(स) तिल
1/2	(x)	(द) 77-79
1/2	(xi)	(अ) आलू

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1/2	(xii)	(स) नीम
1/2	(xiii)	(द) पपीता
1/2	(xiv)	(ब) 25
1/2	(xv)	(अ) 3.58
1/2	(xvi)	(ब) ब्राउनस्वीस
1/2	(xvii)	(अ) स्वीजरलैण्ड
1/2	(xviii)	(द) दुग्ध ज्वर
9		
	2.	रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
1/2	(i)	कृत्रिम
1/2	(ii)	आनुवंशिक
1/2	(iii)	250
1/2	(iv)	अप्रभावित

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1/2	(v)	नहीं
1/2	(vi)	27
1/2	(vii)	वानस्पतिक
1/2	(viii)	केरिकाजेन्थीन
1/2	(ix)	सोडियम बेन्जोएट
1/2	(x)	सींग
5		

3. अति लघूत्तरात्मक प्रश्न -

(i) फैरोमेन ट्रेप - इसमें एक विशेष प्रकार की नर कीटों को आकर्षित करने के लिए मादा की गंध निकलती है जिससे कीट इसकी तरफ आकर्षित होते है। इसके द्वारा नर कीटों को बांझ बनाया जाता है।

1

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) मल्च - इसके द्वारा नमी व मृदा संरक्षण किया जा सकता है।

(iii) ट्रेंच दाब -

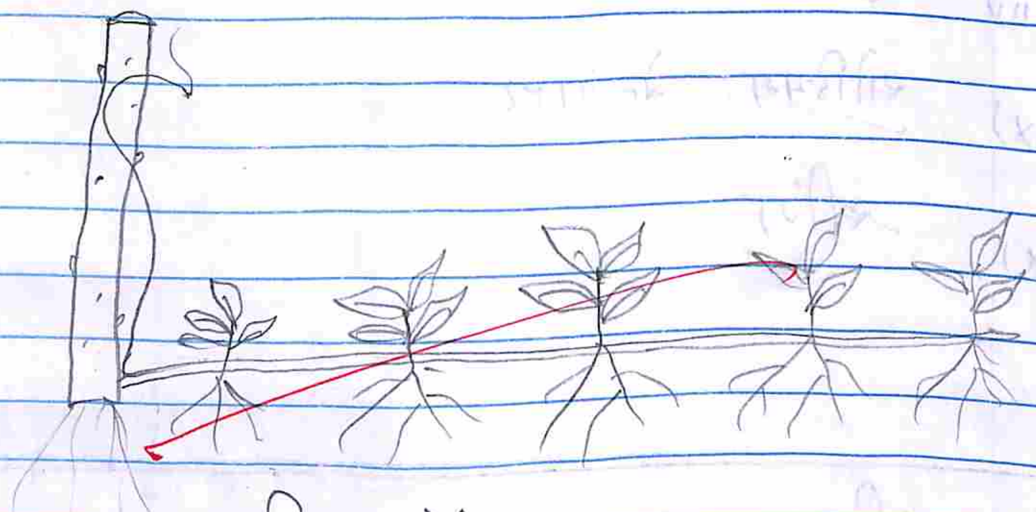

चित्र - ट्रेंच दाब

(iv) केला का कुल - म्यूजेसी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(v)	आदर्श जैली की पहचान - जैली पारदर्शक, आकर्षक और काटने पर चमकदार टुकड़ों में विभक्त हो जानी चाहिए।
1	(vi)	आधिक गर्मी के दिनों में दूध में पैदा होने वाले जीवाणु कोलीफार्म है।
1	(vii)	गाय की दुधारू नस्लें - सिन्धी, साहिवाल, गिर, थरी
1	(viii)	पशुओं में होने वाले जीवाणु जनित रोग - गलघोंटू, जहरबाद

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(ix)	आई. सी. डी. पी. का पूरा नाम -
1		सघन पशु विकास कार्यक्रम
1	(x)	ऑपरेशन - फ्लड के प्रथम चरण का वर्ष -
		1970
10		

[SECTION - B]

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

4. मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में अंतर

मृदा उर्वरता	मृदा उत्पादकता
1. मृदा उर्वरता का संबंध फसलों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने की क्षमता से है।	मृदा उत्पादकता का संबंध प्रति हेक्टेयर उपज से है।
2. मृदा उर्वरता उर्वर हो भी सकती है और नहीं भी।	उत्पादक मृदा हमेशा उर्वर होगी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर	
½×3 (1½)	3.	मृदा उर्वरता की प्रयोगशाला में जाँच की जा सकती है।	मृदा उत्पादकता की जाँच प्रयोग शाला में नहीं कर सकते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	5.	जैविक खेती के उद्देश्य -
½×3	(i)	जीवन धारण करने के लिए कृषि पद्धति जो मनुष्य के स्वास्थ्य व पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुँचाए।
(1½)	(ii)	फसल उत्पादन में ऐसी विधियों का समावेश करना जो मृदा उर्वरता को लम्बे समय तक बनाये रखे।
	(iii)	फसल की खाद्यान्न उपलब्धता को बनाये रखना जो आगामी पीढ़ी के लिए लाभदायक हो।
	6.	बौछारी सिंचाई विधी के लाभ -
	(i)	यह सस्ती, सुगम व सरल विधी है।
	(ii)	बलुई दोमट मृदाओं में जहां बार-बार पानी देना पड़ता है वहां बौछारी विधी लाभप्रद है।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) इसके द्वारा रास्ते में जल ह्रास नहीं होता है।
(iv) जमीन पर पपड़ी बनने की समस्या नहीं होती है।

$\frac{1}{2}\times3$ ($1\frac{1}{2}$)

7. खरपतवारों की विशेषताएँ -

(i) बीज उत्पादन अधिक होना - खरपतवारों के बीजों का उत्पादन फसलों के बीज के अपेक्षा अधिक होता है।

(ii) अधिक गहरी जड़े होना - खरपतवारों की जड़े फसलों की जड़ों के अपेक्षा अधिक गहरी होती है। जिससे ये अधिक गहराई से पोषक तत्व ग्रहण कर सकते है।

(iii) बीज आवरण - खरपतवार के बीजों पर सुरक्षा आवरण पाया जाता है। जैसे- कांटे, बाल, शूल आदि। जिससे ये अपनी रक्षा करते है।

$\frac{1}{2}\times3$ ($1\frac{1}{2}$)

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1/2	8.	**छल्ला कलिकायन** - इस विधि में किसी शाखा या पेड़ की छल्ले के रूप में छाल निकालकर इसके ऊपर अच्छी किस्म व गुणवत्ता युक्त छाल को छल्ले (Ring) के रूप लगाया जाता है जिसे छल्ला कलिकायन कहते है। छल्ला कलिका युक्त होना चाहिए।

1

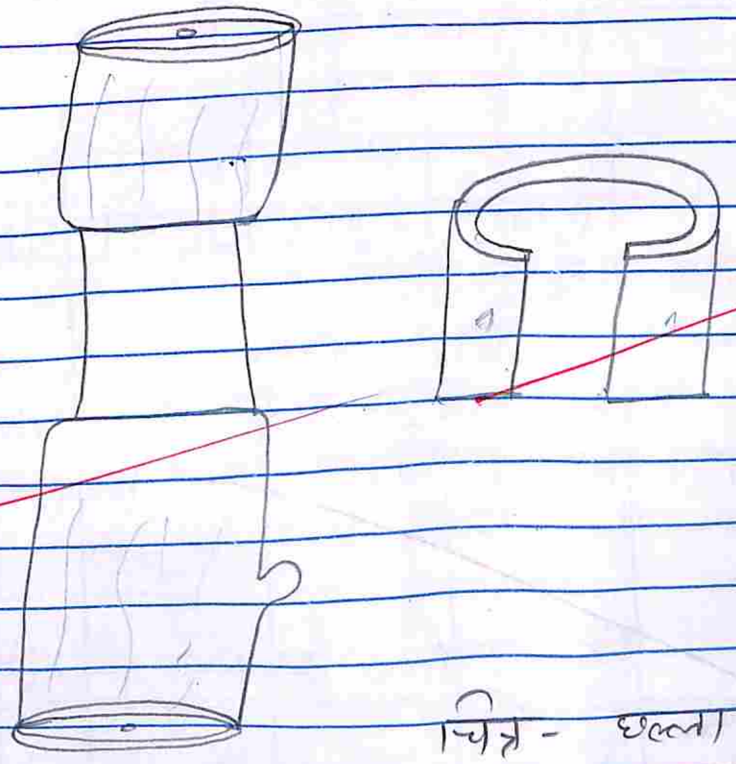

चित्र - छल्ला कलिकायन

1½

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. पंचभुजाकार विधि - इसे पूरक विधि भी कहते है। यह वर्गाकार विधि की तरह ही होती है लेकिन इसमें मध्य में एक पूरक पौधा लगाया जाता है। पूरक पौधे के रूप में पपीता, फालसा, अनार आदि का प्रयोग किया जाता है। इसमें सभी क्रियाएं आसानी से नहीं की जा सकती है।

1½

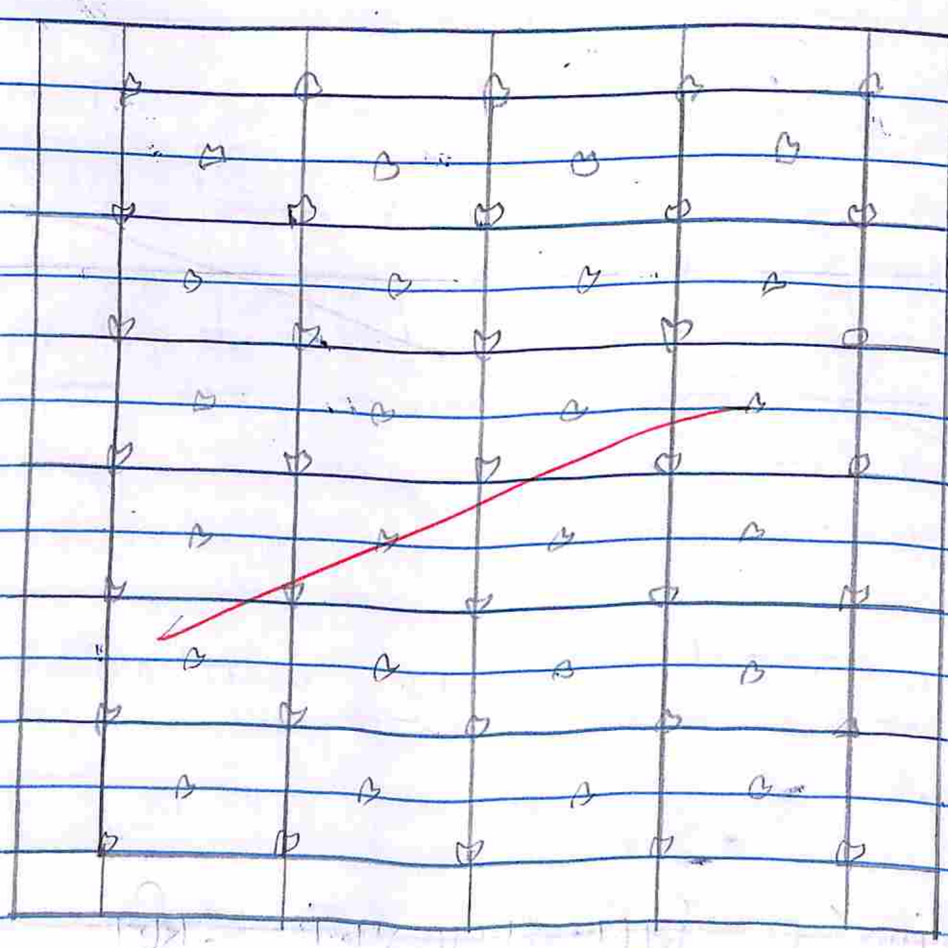

चित्र- पंचभुजाकार विधि का रेखांकन

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

10. फलोद्यान में अफलन के बाह्य कारक -

(i) **पोषक तत्वों का प्रभाव** - पौधों में पोषक तत्वों की उपलब्धता भी अफलन को प्रभावित करती है। नाइट्रोजन की अधिकता होने पर C:N अनुपात संकुचित होता है व नाइट्रोजन की कमी होने पर C:N अनुपात में वृद्धि होती है। कार्बोहाइड्रेट की अधिकता होने पर फलन अच्छा होता है।

(ii) **मौसम का प्रभाव** - मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अफलन की स्थिति आ जाती है। जैसे - आँधी, तूफान, वर्षा, पाला आदि से फल व फूल झड़ जाते हैं जिससे अफलन की समस्या आ जाती है।

½×3 (1½)

(iii) **कीट व रोगों का प्रभाव** - कीट व रोग भी अफलन को प्रभावित करते हैं। जैसे आम के पौधों में ब्लैक टिप रोग होने से उसकी उत्पादकता कम हो जाती है।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. मानव स्वास्थ्य में दही का महत्त्व- भारत में दही की माँग सर्दियों की अपेक्षा गर्मियों में अधिक रहती है। इसमें दुग्ध की अपेक्षा कैल्शियम कम मात्रा में पाया जाता है। इसमें दुग्ध की अपेक्षा फास्फोरस व पोटाश अधिक मात्रा में होता है। अधिक गर्मी के दिनों में दुग्ध में कॉलीफोर्म बैक्टीरिया पैदा हो जाते हैं जो आँतों में गैस बनाते हैं। दही इन बैक्टिरिया को निष्क्रिय कर देता है।

1½

BSER-177/2024

12. गिर नस्ल का उत्पत्ति स्थान- काठियावाड़ (उत्तर प्रदेश)

½

विशेषताएँ-

(i) इसका रंग लाल जिस पर काले, सफेद कत्थई धब्बे होते हैं।

(ii) इसका सिर चौड़ा होता है।

(iii) शरीर सुगठित व सुडौल होता है।

(iv) सींग छोटे व मोटे होते हैं।

1

1½

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

13. दुग्ध ज्वर रोग के लक्षण -

(i) पशु निढाल तथा बेहोशी की हालत में पड़ा रहता है।

(ii) पशु अपनी गर्दन को पेट की तरफ मुड़ाकर रखता है।

(iii) पशु के हाथ लगाने पर ठण्डा महसूस होता है।

(iv) दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है।

(v) पशु खाना पीना कम या बंद कर देता है।

$\frac{1}{2} \times 3$

$1\frac{1}{2}$

[SECTION-C]

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न -

14. **स्थायी विधि** - यह फल परिरक्षण की ऐसी विधि है जिसमें फल व सब्जियों को कुछ वर्षों तक परिरक्षित किया जा सकता है।

फल परिरक्षण की स्थायी विधियां -

(i) **जीवाणुविहीनकरण** - फल व सब्जियों को जीवाणु रहित करने के लिए इसे 100°C ताप पर 30-60 मिनिट तक रखा जाता है जिससे जीवाणुओं की क्रिया निष्क्रिय हो जाये।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) किण्वीकरण - इस क्रिया विशेष पदार्थों को किण्वन के लिए प्रयोग किया जाता है। जो कि परिरक्षण में स्थायी रूप से कार्य करते है।

(A) एल्कोहल किण्वन - इसमें एल्कोहल का किण्वन हेक्सोज शर्करा द्वारा होता है। इसमें मुख्य किण्वित पदार्थ एल्कोहल है।

$$C_6H_{12}O_6 \xrightarrow{\text{हेक्सोज शर्करा}} C_5H_{10}O_4 + H_2O + CO_2$$

(B) एसीटिक अम्ल किण्वन - इसमें एसीटिक अम्ल का किण्वन एल्कोहल द्वारा होता है। इसमें मुख्य पदार्थ एसीटिक अम्ल है।

$$C_5H_{10}O_4 + H_2O \xrightarrow{\text{एल्कोहल}} CH_3COOH + CO_2$$

(iii) परिरक्षित पदार्थों द्वारा परिरक्षण - इसमें परिरक्षित पदार्थों द्वारा जैसे नमक, चीनी, सिरका, तेल आदि के द्वारा पदार्थों को परिरक्षित किया जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(A) नमक - स्थायी परिरक्षण के लिए नमक की 15-20% मात्रा का उपयोग ~~अतः~~ किया जाता है। जिससे परासरण दाब के कारण ये परिरक्षित रहते है।

(B) चीनी / शर्करा - इसकी 65-70% मात्रा परिरक्षण का कार्य करती है।

(C) सिरका - सिरका जीवाणु के लिए विष का कार्य करता है। इसकी 2% मात्रा पदार्थों को परिरक्षित रखती है।

(D) तेल - तेल की 1-2 इंच मोटी परत को जीवाणु भेद कर नहीं जा पाते है। जिससे पदार्थ परिरक्षित रहते है।

3

(iv) कार्बन डाई ऑक्साइड (CO_2) - पेय पदार्थ में CO_2 का प्रयोग किया जाता है। CO_2 से परिरक्षित पदार्थों को कार्बनीकृत पेय के रूप में जाना जाता है।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. नीली नस्ल का उत्पत्ति स्थान - अमृतसर का फिरोजपुर में नीली रावी व सतलुज नदियों का क्षेत्र है।

वितरण - उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश व राजस्थान में इसका वितरण किया गया है।

विशेषताएँ -

(i) इसका रंग नीला या हल्का काला होता है।
(ii) इसकी गर्दन पतली व लम्बी होती है।
(iii) शरीर सुन्दर होता है।
(iv) आँखें चमकदार होती हैं।
(v) त्वचा मुलायम व चमकदार होती है।
(vi) इसकी पूँछ लम्बी होती है।
(vii) सींग पतले होते हैं।

उपयोगिता - प्रति ब्यांत दुग्ध उत्पादन 11000 - 18000 ली. होता है।

1
1
1
1×3
(5)

BSER-17/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. थनैला रोग का रोगकारक - स्ट्रेप्टोकोकाई एगेलेक्टिया (जीवाणु द्वारा)

1

लक्षण -

1

(i) अयन / थन कठोर व पीड़ा दायक होते हैं तथा बाद में पीड़ा रहित हो जाते हैं।

(ii) दूध के रंग में परिवर्तन हो जाता है। पहले दूध हल्का पीला तथा बाद में लाल रंग का आने लगता है। अंत में दूध फटे दही के समान आता है।

(iii) रोगग्रस्त थन / अयन छोटा या सिकुड़ जाता है।

(iv) दूध छैना के पानी जैसा आने लगता है जिसमें खून, मवाद आदि के थक्के नजर आते हैं।

(v) दूध आना कम या बंद हो जाता है।

1

उपचार -

(i) थनों से सारा दूध निकालकर उसमें मेस्टीटिस ट्यूब चढ़ाना चाहिए।

(ii) अगर गादी गर्म हो तो 2-3 बार ठंडे पानी का छिड़काव करें और यदि ठंडी हो तो गर्म पानी का छिड़काव करें।

1x3
③

(iii) इंजेक्शन डेक्सोना अंतः पेशी दें।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

[SECTION- D]

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

17. बाजरा की वैज्ञानिक खेती -

(i) जलवायु - शुष्क व नम जलवायु तथा तापमान 25-30°C तक उपयुक्त रहता है।
इसके लिए बलुई दोमट मृदा उपयुक्त रहती है जिसका pH मान 6.5-7.5 हो।

(ii) बीज दर व बीजोपचार - बाजरा की बीज दर 4-5 kg/h उपयुक्त रहती है। बीजों को थाइरम, कार्बेन्डिजाइम व ट्राइकोडर्मा से उपचारित करना चाहिए। अर्गट रोग के प्रभाव को कम करने के लिए 2% नमक के घोल में बीजों को डुबोना चाहिए।

(iii) उन्नतशील किस्में - राज बाजरा चरी, जायद बाजरा, HHB-67, HHB-69, RHB-173, RHB-177

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) पादप संरक्षण -

(A) कीट -

=> तना छेदक - यह कीट तने में छेद कर देते है। जिससे पौधो को काफी नुकसान होता है व पौधे गिर जाते है।

उपचार - M-45, रोगोर, Z-78, COC

=> पत्ती छेदक, हरा तेला, मोयला, कातरा - यह कीट पौधो का रस चूस कर उस पर मीठा चिपचिपा पदार्थ छोड़ते है।

उपचार - रोगोर, इमिडाक्लोप्रिड

(B) व्याधियां -

=> हरित बाली रोग / जोगिया रोग - इस रोग में पुष्पक्रम के स्थान पर पत्तियों का निर्माण हो जाता है। ये पत्तियां प्रारंभ में नीचे व बाद में पूरे पुष्पक्रम पर बन जाती है।

उपचार - (i) रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर फेंक देना चाहिए।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करना चाहिए।
(iii) बीजों को उपचारित कर बोना चाहिए।

⇒ **अर्गट (चेंपा) रोग** - इस में पौधे पर गुलाबी रंग का चिपचिपा पदार्थ बनता है। जो सूखने पर भूरे-काले रंग का हो जाता है।

उपचार - बीजों को 2% नमक के घोल से उपचारित करना चाहिए।

हरित बाली रोग का रोगकारक - स्क्लेरोस्पोरा ग्रेमिनिकोला

अर्गट (चेंपा) रोग का रोगकारक - क्लेविसेप्स फ्यूजीफोर्मिस

1×4
(4)

स्तम्भन - बाजरा के पौधों को आपस में एक-दूसरे की पत्तियों से बांध देते है। जिससे पौधे गिरते नहीं है, इसे स्तम्भन (Proping) कहते है।

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. नींबू की वैज्ञानिक खेती -

(i) भूमि एवं जलवायु - ठण्डी व नम जलवायु तथा 15-25°C तापमान उपयुक्त रहता है। इसके लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है। मृदा का pH मान 6.5-7.5 होना चाहिए व भूमि 2 m तक कोई अवरोध नहीं होना चाहिए।

(ii) उन्नत शील किस्में - कागजीकलाँ, कागजी नींबू, बारहमासी नींबू, सई शर्बती, जयदेवी

(iii) पौधे लगाने की विधि - इसमें पौधे से पौधे की दूरी 3X3 m व गड्ढो का आकार 75X75X75 cm रखते है। बुआई के 1-2 सप्ताह या एक महीने पहले गड्ढो में सड़ी हुई गोबर की खाद व दीमक की रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफॉस डालना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) कीट एवं व्याधियां -

(A) कीट -

⇒ **पर्ण सुरंगक** - यह कीट पौधे की पत्तियों में सुरंग बनाकर उसको मोड़ देता है। जिससे पौधे की वृद्धि व विकास प्रभावित होता है।

उपचार - इमिडाक्लोरपिड, क्यूनालफॉस

⇒ **फल छेदक** - यह कीट फल में छेद कर फल की गुणवत्ता को खराब कर देता है।

उपचार - रोगोर

(B) व्याधियां -

⇒ **नींबू का कैंकर रोग** - यह रोग जैन्थोमोनास अक्जोनोपोडिस पैथोवार सिट्राई जीवाणु द्वारा होता है। यह रोग घाव व गैस रंध्रों द्वारा पौधों में प्रवेश करता है। इस रोग में पत्तियों, फल, शाखा व कांटे पर जलासिक्त धब्बे बन जाते हैं।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपचार -

(i) रोग ग्रस्त पौधों या टहनियों को नष्ट कर देना चाहिए।

(ii) रोग रोधी किस्मों का प्रयोग करना चाहिए।

1×4

(4)

"समाप्त"

❀ ❀ ❀

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-172-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-127/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024